ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592695

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

भारतीय चित्रों में नारी अंकन परंपरा

डॉ. योगेश्वरी फिरोजिया [1]
[1] चित्रकला संकाय राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर-474002

मुख्य शब्द – भारतीय, परंपरा, नारी

Cite This Article: डॉ. योगेश्वरी फिरोजिया. (2019). "भारतीय चित्रों में नारी अंकन परंपरा." *International Journal of Research - Granthaalayah,* 7(11SE), 301-305. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592695.

हमारे प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथों में समस्त कलाओं में चित्रकला को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह धर्म, अर्थ, काम और मौक्ष को देने वाली है यथा

कलानां प्रवरं चित्रं धर्मकामार्थमोक्षदम्।
मंगल्य प्रथमं ह्येतद् ग्रहे यत्र प्रतिष्ठितम्॥

जिस प्रकार पर्वतों में सुमेरू, अण्डज प्राणियों में गरुड, मनुष्यों में राजा एवं कलाओं में चित्रकला सर्वोत्तम है।

यथा सुमेरु प्रवरो नागानां यथाण्डजानां गरुडः प्रधानः।
यथा जनानां प्रवरः क्षितीशस्तथा कलानामिहचित्रकल्पः॥[1]

समरांगण सूत्रधार के अनुसार
'चित्रं हि सर्व शिल्पानां मुखं लोकस्य च प्रियम्'
अर्थात् सभी शिल्पों में चित्रकला प्रमुख है।
कामसूत्र में एक शेष चित्र के लिए छह अंगों की चर्चा है।
रूपभेदाः प्रमाणानि भाव-लावण्य योजनम्।
सादृश्यं वर्णिका भंग इति चित्र षडंगकम्॥[2]

सभी ललित कलाओं में चित्रकला एक ऐसी कला है जो, विषय विस्तार की दृष्टि से बहुत व्यापक है। मार्कण्डेय मुनि ने पांचों ललित कलाओं, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीत एवं काव्य आदि में चित्रकला को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करते हुए उसे मंगल दायिनी माना है। चित्र एक सार्वभौमिक भाषा है, जिसका माध्यम रेखा और रंग है। चित्रकला में भाव प्रदर्शन की असाधारण क्षमता होने के कारण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की अनुभूतियां प्रभावशाली ढंग से चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त की जा सकती हैं। भावाभिव्यक्ति, भारतीय

चित्रकला के प्राण हैं और उसका मुखय आधार रेखांकन है जो दर्शक को उस भाव-भूमि का आभास कराता है, जहां पहुंचकर चित्रकार ने उस आत्मानुभूति को अनुभवित कर अभिव्यक्त किया है।[3]

अत्यंत प्राचीनकाल से भारतीय चित्रकार की आंकाक्षा नारी चित्रांकन करने की रही है। वस्तुतः कला और नारी का आपस में गहरा संबंध है, नारी के विभिन्न रूप कलाकार को आकर्षित कर उसका सृजन करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं। सौन्दर्य की द्योतक कला में लावण्य, सौन्दर्य, शोभा, कांति और कोमलता का समावेश है। इन समस्त गुणों की आधार स्रोत नारी है। विभिन्न कलाओं, कलाविदों, साहित्यकारों एवं शिल्पियों में कोमल भावनाओं के प्रतीक रूप में नारी को स्थान दिया है। सुश्री वीणा माथुर के अनुसार यदि सौन्दर्य की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति कला है, तो कला को संसार की सर्वाधिक सुन्दर वस्तु नारी से प्रेरणा आलम्बन व आधार लेना होगा।[4] चित्रकार के अंर्तजगत में जिन संवेदनाओं का उद्गम होता है उसकी अभिव्यक्ति कला रूप में नारी के अभाव में संभव नहीं है।[5] नारी का सौन्दर्य सृष्टि के आदिकाल से मानव सौन्दर्यानुभूति का केन्द्र रहा है जिसे उक्त शोध-पत्र के माध्यम से प्रार्थी ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मनुष्य ने जिस समय प्रकृति के आंचल में आंखें खोलीं संभवतः तभी से उसके मन में चित्रकला के बीज का प्रस्फुटन हो चुका था। अपनी मूक भावनाओं को अनगढ़ पत्थरों पर किसी बांस अथवा रेशेदार पतली टहनी की बनी हुई तूलिका से टेढ़ी-मेढ़ी रेखाकृतियों के रूप में जो कुछ उसने देखा या अनुभवित किया[6] उसे गुफाओं एवं चट्टानों की भित्तियों पर अभिव्यक्त किया। यह कलाकृतियां भारत के अतिरिक्त फ्रांस, स्पेन, इटली तथा एजेडियन द्वीप के साथ चीन एवं आस्ट्रेलिया में भी प्राप्त हुई हैं जिसकी खोज सन् 1868 - 1879 में की गईं।[7]

भारत में प्रागैतिहासिक शिलाचित्र पँचमढ़ी, होशंगाबाद, सिंघनपुर, मंदसौर, मिर्जापुर, मानिकपुर आदि में प्राप्त हुए हैं इनमें विशेष उल्लेखनीय वे चित्र हैं जिनमें आदिमयुगीन नारी को ज्यामितीय आकारों व सरल रेखाओं द्वारा उभारने का प्रयास किया है।[8]

इनमें से कुछ चित्रों का वर्णन इस प्रकार है-

1. जम्बूद्वीप (पंचमढ़ी) के शिलाश्रय क्रमांक 4 पर मटमैले सफेद रंग से अंकित इस चित्र में दो योद्धा पुरुषों के साथ एक सज्जित एवं अलंकृत स्त्री का सहचरण प्रदर्शित है। प्रस्तुत चित्र में स्त्री का एक हाथ घूमता हुआ है और दूसरा कुछ ऊपर को उठा हुआ है। इस मुद्रा से नर्तन का आभास होता है। अतएव यह चित्र सहचरण ही नहीं, सहनर्तन का भी द्योतक है। पुरुषों का अंकन सरल रेखा में ज्यामितिकता सर्वत्र व्याप्त है। चित्र पर्याप्त रोचक है।[9] यह चित्र गॉर्डन द्वारा प्रकाशित अनुकृति पर आधारित है।

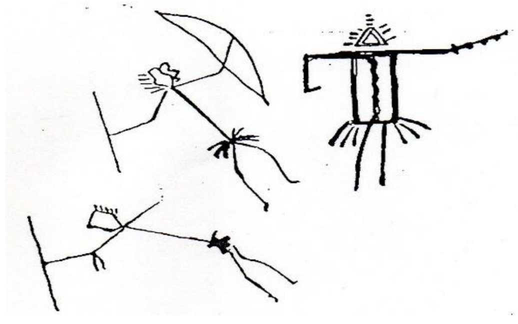

2. जम्बूद्वीप (पंचमढ़ी) के शिलाश्रय क्रमांक 4 में लाल बह्यरेखायुक्त श्वेतवर्णी शैली में निजीअंकन विधि के साथ चित्रित अपहरण का एक अत्यंत मनोरंजक दृश्य है जिसमें धनुर्धर वीर पुरुष एक नारी को हाथ पकड़कर ले जा रहा है। तीन अन्य स्त्रियां इस स्थिति को देखकर चकित हैं। 'पाणिगृहीत' स्त्री उनकी ओर अथवा पृरुष की ओर मुड़कर देख रही है। यह रेखा अनुकृति गॉर्डन द्वारा प्रकाशित अनुकृति पर आधारित है, परन्तु मूल शिलाचित्र को देखने पर ज्ञात होता है कि पहली तीन स्त्रियां अनेक अनगढ़ आयताकार चिन्हों के बाद पर्याप्त व्यवधान देकर अंकित हैं। शैलीगत विशेषताओं और विषय संदर्भ की दृष्टि से अवश्य वे पृथक न होकर चित्र का ही सम्बद्ध अंश प्रतीत होती हैं। सभी स्त्रियों का देह भाग आयताकार और एक दूसरे को काटती हुई कर्ण-रेखाओं से युक्त है। उनके अधोवस्त्र भी रेखांकित हैं। पहली और अंतिम आकृति में चारखाने वाले और तीसरी व चौथी आकृति में खड़ी पट्टियों वाले रूप में रेखांकित है। मुख का रचना प्रकार विशिष्ट एवं सरल है। शिरो रेखा सीधी नाक की नोक तक चली जाती है और होठों का आभास दिये बिना उसे एक ही घुमाव देकर गले से जोड़ दिया गया है। शिरो रेखा का दूसरा सिरा कहीं सीधे कण्ठ तक चला गया है, कहीं जूड़े के वृत्त का रूप ग्रहण करने के पश्चात् स्कंध रेखा में परिणत हुआ है। स्त्री-पुरुष सभी के चेहरों के भीतर बिन्दुदेकर आंख का चित्रण किया गया है। जो अन्य प्रकार की पूरक शैलियों में नहीं मिलता। धनुर्धर की मुद्रा से हरण की सफलता का गर्व प्रकट हो रहा है।[10]

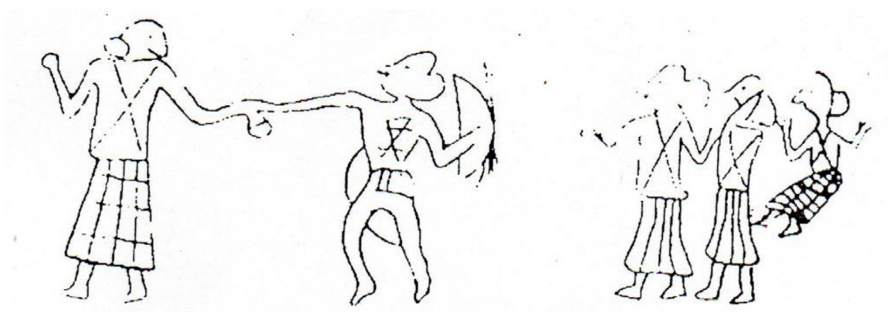

3. जम्बूद्वीप (पंचमढ़ी) के शिलाश्रय क्रमांक चार पर ही मटमैले सफेद रंग से पूरक शैली में निर्मित पुरुष चित्र पर आक्षिप्त एक मुक्तकेशी स्त्री की आकृति अंकित है जिसके पैर एकाकार सम्बद्ध रूप में बने हैं और उठे हुए हाथों वाली उसकी मुद्रा भी असाधारण है। सम्भव है इस प्रकार का आक्षेपण स्त्री पुरुष के पारिवारिक जीवन से सम्बद्ध है, किसी विश्वास का प्रतीक हो, क्योंकि दोनों चित्रों की शैली प्रायः एक जैसी है। पुरुष के पैर और स्त्री के केश लहराते हुए चित्रित हैं। अधिक सम्भावना दोनों चित्रों के परस्पर असम्बद्ध होने की ही है। उस दिशा में इसे पारिवारिक दृश्यों के वर्ग में न मानकर मानवाकृतियों के वर्ग में रखना होगा। यह प्रतिकृति गॉर्डन द्वारा प्रकाशित अनुकृति पर आधारित है।[11]

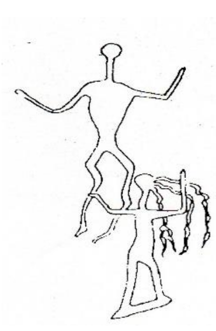

4. प्रस्तुत चित्र में एक कामातुर स्त्री-पुरुष युग्म परिबद्ध बाह्य रेखांकन से युक्त है जिसमें उत्तेजित पुरुष स्त्री को केशों से पकड़े हुए है।[12]

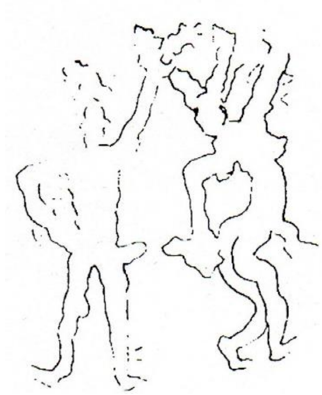

5. जम्बूद्वीप (पंचमढ़ी) के प्रमुख शिलाश्रय के दायीं ओर सफेद रंग से पूरक शैली में अंकित एक वादक और नर्तकी के युग्मक सहनर्तन का मूल से ही अनुकृत आकर्षक दृश्य इसमें नर्तन और वादन दोनों की गतिमय स्थिति पारस्परिक संगति के साथ प्रदर्शित है। नर्तकी के दोनों हाथ आगे की ओर एक सी तरंगायित मुद्रा में अंकित है। कोहनियों के कोण नर्तन की विशेष भंगिमा के कारण ही ऊपर की ओर चित्रित है। पीछे लहराती हुए वेणी, पैरों और ऊपरी देह भाग का आगे को झुकाव तथा ग्रीवा की तदनुरूप उठान शरीर की लयान्वित सजीवता का परिचय देती है। पुरुष के रूप विन्यास में पैरों का अतिशय लहरीलापन तथा देह को इधर-उधर आवर्तित करते और दोनों हाथों से वाद्य-यंत्र बजाते हुए घूमकर देखना उसी प्रकार की अन्विति का बोध कराता है जो नर्तन में ताल और लय की संगति के साथ घटित होती रहती है।[13]

उपर्युक्त विवेचित चित्रों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्रागैतिहासिक कालीन चित्रों में नारी अंकन में ज्यामितिय आकारों लहरदार रेखाओं कहीं-कहीं मुख के हाव-भाव को विशेष घुमाव देकर अंकित किया गया है। कहीं वस्त्रों की रचना में चारखाने, आढ़ी-खड़ी रेखाओं, कर्णवत रेखाओं का प्रयोग कर विविधता प्रदान की है तो, कहीं विशिष्ट मुद्राओं जैसे पैरों की एकाकार सम्बद्ध मुद्रा, सरल रेखाओं में धनुर्धर का अंकन कर उसकी वीरता को विशिष्टता प्रदान करना। कहीं उठे हुए हाथों वाली मुक्तकेशी तो कहीं उत्तेजित पुरुष स्त्री को केशों से पकड़े हुए एवं अंतिम चित्र में एक वादक और नतृकी के युग्मक सहनर्तन में उसी प्रकार की अन्विति का बोध कराता है, जो नर्तन में ताल और लय की संगति के साथ घटित होती रहती है।

इन चित्रों से हमें यह भी ज्ञात होता है कि सौन्दर्य के प्रति आकर्षण और उसकी अभिव्यक्ति मानव की सहज प्रवृत्ति है। यह मानवीय व्यवहार का आवश्यक अंग भी है। अपने एकांतावास में आदिमयुगीन मानव ने दैनिक जीवन से संबंधित विविध विषयों का अंकन करते हुए, नारी आकृतियों का आकर्षक मुद्राओं एवं अनेकानेक भावों यथा भय, आवेग, उद्वेग, उल्लहास, सहानुभूति, श्रद्धा, प्रेम, मैत्री आदि का प्रभावपूर्ण अंकन किया है।

संदर्भ सूची

[1] विष्णुधर्मोत्तरपुराण, तृतीय खण्ड (4.143.38)
[2] वात्स्यानन, कामसूत्र, यशोधरं कृत मंगल टीका, पृ. 88
[3] भार्गव, सरोज, सौन्दर्य बोध एवं ललित कलाएँ, पृ. 67-69
[4] माथुर, वीणा, प्रसाद का सौन्दर्य दर्शन, पृ. 42-43
[5] गुप्त, मोहनलाल, संस्कृति के स्वर - नारी के विधि रूप, पृ. 6-7
[6] वर्मा, अविनाश बहादुर भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ. 21
[7] Thames and Hudson, The Picture Encyclopaedia of Art, P. 101
[8] अग्रवाल, आर.ए., कला-विलास - भारतीय चित्रकला का विकास, पृ. 7
[9] गुप्त, जगदीशचन्द्र, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, फलक 2, चित्र 1, पृ. 387, व्याखया, पृ. 359
[10] गुप्त, जगदीशचन्द्र, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, फलक 2, चित्र 1, पृ. 366, व्याखया, पृ. 359
[11] गुप्त, जगदीशचन्द्र, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, फलक 2, चित्र 2, पृ. 366, व्याखया, पृ. 359
[12] गुप्त, जगदीशचन्द्र, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, फलक 2, चित्र 3, पृ. 366, व्याखया, पृ. 359-360
[13] गुप्त, जगदीशचन्द्र, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, फलक 1, चित्र 2, पृ. 396, व्याखया, पृ. 377